(वेध गीत २००१)

गीत गा रहे है आज हम

गीत गा रहे है आज हम,
रागिनी को ढूँढते हुए
आगए यहाँ जवा कदम,
जिंदगी को ढूँढते हुए ।।धृ।।

ये दिलो मे ये उमंग हैं,
हम जहाँ नया बसाऐंगे
जिंदगी का दौर आज से,
दोस्तो को हम सिखाऐंगे
फूल हम नये खिलाऐंगे,
ताजगीको ढूँढते हूए ।।

दहेज का बूरा रिवाज है,
आज देश मे, समाज में
है तबाह आज आदमी,
लूट पर टिके समाज में
हम समाज भी बनाऐंगे,
आदमी को ढूँढते हुऐ ।।

फिर न रो सके कोई दुल्हन,
जोर जुल्म का न हो निशान,
मुस्कुरा उठे धरा गगन,
हम रचेंगें ऐसी दास्ताँ
हम वतन को यू सजाऐंगे,
हर खुशी को ढूँढते हुए ।।